E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(12): 60-63
Received: 01-10-2023
Accepted: 05-11-2023

सरिता
एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षा विभाग
अदिति महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
सरिता
एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षा विभाग
अदिति महाविद्यालय, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वः एक अध्ययन

सरिता

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i12a.1146

सारांश
गांव में रहने वाली लड़कियों का बाहरी दुनिया के साथ सीमित संपर्क होता है। लड़कियां परंपरागत रूप से घरेलू कार्य ही करती हैं। इस शोध लेख के उद्देश्य ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों को जानना, उनके इन आदर्शों के निर्माण के पीछे के कारणों को समझना, इन आदर्शों के निर्माण में शिक्षिकाओं की भूमिका को समझना प्रमुख है। यह शोध गुणात्मक पद्धति के साथ किया गया है। इसमें साक्षात्कार, अनौपचारिक बातचीत का शोध उपकरण के रूप में उपयोग किया गया है। शोध के निष्कर्ष हमें ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों के निर्माण को समझने एवं गांव में विद्यालय एवं शिक्षिकाओं की भूमिका को समझने में सहायक है एवं एक नई समझ एवं दृष्टि इस संबंध में देते हैं। यह शोध बेहतर शिक्षक और बेहतर विद्यालय वातावरण के महत्त्व को सामने लाता है।

कुटशब्दः आदर्श, गांव, लड़कियां, शिक्षिकाएं, परिवार

प्रस्तावना
यह शोध लेख हरियाणा राज्य के झज्जर जिले में किए शोध पर आधारित है। हरियाणा राज्य की आर्थिक स्थिति तो अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर है परंतु जनगणना के आंकड़े दर्शाते हैं कि यहां स्त्रियों की संख्या कम है, लड़कियां कम हैं। पितृसत्तात्मक समाज है एवं खेती व पशुपालन यहां के लोगों का मुख्य पेशा है। 2011 की जनगणना के आंकड़े हरियाणा में लड़कियों की कमी और पुरुषों की तुलना में कम साक्षरता दर को स्पष्टता से बताते हैं। यहां गांव में रहने वाली लड़कियों के आदर्ष व्यक्तित्व के संबंध में इस शोध में अध्ययन किया गया है।

शोध का उद्देश्य
प्रत्येक शोध के पीछे मन में कौंधे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न होते हैं जिनका उत्तर पाने की जिज्ञासा में शोध कार्य किए जाते हैं। इस शोध लेख की पृष्ठभूमि में भी ऐसे ही जिज्ञासु प्रश्न रहे और उसी के आधार पर इसके शोध उद्देश्यों का निर्माण किया गया। इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्न है–

- ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों को जानना।
- ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों के निर्माण के पीछे रहे कारणों को समझना।
- ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों के निर्माण में शिक्षिकाओं की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के सशक्तीकरण में विद्यालयों की बेहतर भूमिका हेतु सुझाव देना।

शोध का औचित्य
इस शोध में ग्रामीण परिवेश में किशोरी लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों, उनके पीछे के निर्माण कारणों, इन आदर्शों के निर्माण में शिक्षिकाओं की भूमिका एवं स्कूल की भूमिका को जानने, समझने और विश्लेषित करने का प्रयास रहा है। गांव में, ग्रामीण परिस्थिति में इन उद्देश्यों के साथ शोध नहीं हुए हैं। गांव में लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों के निर्माण के संबंध में शोधों की कमी है। भारत चूंकि गांव में बसता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की दो–तिहाई आबादी गांव में निवास करती है। अतः दो–तिहाई आबादी की लड़कियों के संबंध में शोध का महत्त्व बढ़ जाता है। दूसरा इस शोध का महत्त्व अभी तक लड़कियों के इन अनछुए पहलुओं पर भी है। यह शोध हमारे समक्ष ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों के निर्माण के संबंध में नई दृष्टि देने वाला एवं हमारी समझ बढ़ाने वाला है। यह शोध नीति–निर्माताओं के लिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे ग्रामीण लड़कियों के संबंध में नए आयाम हमारे समक्ष आ रहे हैं। यह शोध शिक्षा से जुड़े नीति–निर्माताओं, प्रशासकों एवं शिक्षकों के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ग्रामीण बालिकाओं के आदर्श व्यक्तित्वों के निर्माण

कैसे स्कूल एवं शिक्षिकाओं से संबंधित है इसकी समझ भी यह शोध बढ़ाता है और इस प्रकार सभी संबंधित व्यक्तियों, संस्थाओं के लिए भावी नीति निर्माण एवं उसके कार्यान्वयन हेतु भी इस शोध का महत्त्व बढ़ जाता है। अतः यह शोध कार्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

शोध की रूपरेखा
यह शोध कार्य गुणात्मक पद्धति से किया गया है। गुणात्मक पद्धति का शोध में अपना ही महत्त्व होता है –

शोध उपकरण
इस शोध को करने के लिए दो शोध उपकरणों का उपयोग किया गया जो निम्न है –

साक्षात्कार : इस शोध को करने के लिए ग्रामीण लड़कियों के साक्षात्कार लिए गए थे। ये साक्षात्कार लड़कियों से उनके गांव में ही लिए गए थे।

अनौपचारिक बातचीत : साक्षात्कार के अतिरिक्त अनौपचारिक बातचीत से भी प्राप्त महत्त्वपूर्ण आंकड़ों का इस्तेमाल इस शोध में किया गया था। साक्षात्कार प्रारंभ होने से पूर्व और पश्चात् इस तरह की अनौपचारिक बातचीत की परिस्थितियाँ बन गई थी और बहुत बार तो इन अनौपचारिक बातचीत में महत्त्वपूर्ण आंकड़ों का एकत्रीकरण किया गया।

न्यादर्श
यह शोध कार्य हरियाणा प्रदेश के झज्जर जिले की सौ लड़कियों पर किया गया था। गांव में उद्देश्यपक ढंग से न्यादर्ष का चयन किया गया था।

शोध का परिसीमन
यह शोध गांव की कक्षा 6 से कक्षा 12 तक पढ़ने वाली 11 से 18 वर्ष की आयु की लड़कियों पर किया गया है।

संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा
इस शोध कार्य से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित शोध नहीं हुए हैं परंतु अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित शोध हैं जिनका लाभ लेने का प्रयास किया गया। इस शोध कार्य से संबंधित कुछ शोधों की समीक्षा संक्षेप में आगे है।

''सामाजिक बहिर्वेशन अस्मिता एवं शिक्षा : दलित समुदाय के संदर्भ में एक व्यक्तिवृत अध्ययन'' (2013) संजय शर्मा के दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के अंतर्गत किए इस पीएचडी शोध के प्रमुख उद्देश्य जाटव समुदाय के संदर्भों को समझना जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक सम्मिलित है, शिक्षा के संदर्भ में सामाजिक बर्हिवेषण एवं अस्मिता, इसकी प्रक्रिया एवं प्रभावित करने वाले को समझना प्रमुख है। यह शोध आगरा क्षेत्र में किया गया था। इसमें साक्षात्कार, अवलोकन एवं मैदानी सर्वेक्षण का इस्तेमाल आंकड़े एकत्रित करने के लिए किया गया था। इस शोध में पाया गया कि जाटव समुदाय अपने प्रति जाति आधारित घृणात्मक विचारधारा को झेल रहा है। शिक्षा की कोई भी भूमिका इनकी अस्मिता निर्माण में नहीं है। विद्यालय में इनके प्रति पक्षपात होता है एवं व्यावसायिक स्थिति एवं बहिर्वेषन में सकारात्मक सहसंबंध है।

''दलित वूमेन एवं वाटर : अवैलबिलटी एक्सेस एंड डिस्क्रिमिनेशन इन रूरल इंडिया'' (2018) भारत के पांच राज्यों – बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा एवं आंध्र प्रदेश पर आधारित है। इस आलेख में गांव में दलित महिलाओं तक जल की सुलभता, पहुंच तथा पक्षपात का अध्ययन किया गया है। फोकस समूह चर्चा, साक्षात्कार और व्यक्तिवृत्त अध्ययन से आंकड़े एकत्रित किए गए हैं। इस अध्ययन में सार्वजनिक स्थानों पर जल आधारित भेदभाव पाया गया। दलित महिलाओं को मौखिक और शारीरिक दुर्व्यवहार एवं निरंतर चुनौतियों का सामना सार्वजनिक स्थान से जल लाते समय करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र में दलित के लिए पेयजल की सुलभता न होना उनके साथ भेदभाव का कारण है इत्यादि। इस शोध में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण एवं निष्कर्ष को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्व
शोध में पाया गया कि लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों में मम्मी, शिक्षिका, पापा इत्यादि व्यक्तित्व प्रमुख हैं। इन सबको एक तालिका के माध्यम से आगे प्रस्तुत किया गया है।

क्र.सं.	लड़कियों की संख्या प्रतिशत में	आदर्श व्यक्तित्व
1.	27 प्रतिशत	मम्मी
2.	21 प्रतिशत	शिक्षिका
3.	17 प्रतिशत	मम्मी व पापा
4.	8 प्रतिशत	पापा
5.	11 प्रतिशत	अन्य परिजन
6.	8 प्रतिशत	गीता फोगाट
7.	3 प्रतिशत	अन्य
8.	5 प्रतिशत	नहीं पता

आंकड़ों से स्पष्ट है की लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्वों में उनकी मम्मी सबसे आगे है। कुल 63 प्रतिशत आदर्श व्यक्तित्व लड़कियों के परिवार के ही हैं जिसमें मम्मी के अतिरिक्त पापा एवं अन्य परिजन हैं। परिवार के पष्चात् लड़कियों की शिक्षिकाएं उनकी आदर्श हैं। इतनी अधिक संख्या में लड़कियों द्वारा अपनी शिक्षिका को अपने आदर्श व्यक्तित्व बताना इनके जीवन में इनके महत्त्व की ओर संकेत करता है। अन्य परिजनों में दादा–दादी, चचेरे भाई–बहन, चाचा–चाची इत्यादि आते हैं। अंतरराष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी गीता फोगाट को 8 प्रतिशत लड़कियां अपना आदर्श बताती है। यह भी बहुत से संदर्भों की ओर संकेत करता है। मात्र 5 प्रतिशत लड़कियां ऐसी थी जिनका कोई आदर्श व्यक्तित्व नहीं था और उन्होंने स्पष्ट कहा कि उन्हें नहीं पता। 3 प्रतिशत लड़कियों ने महान स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह, वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम को भी और लॉन टेनिस खिलाड़ी सानिया मिर्जा को अपना आदर्श व्यक्तित्व बताया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 95 प्रतिशत लड़कियों के अपने–अपने आदर्श व्यक्तित्व थे और वे उन जैसा जीवन में बनना भी चाहती थी।

ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण के पीछे के कारण
जहां तक ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण के पीछे के कारण हैं वे आंकड़ों को विश्लेषित करने के उपरांत स्पष्ट होता है कि ग्रामीण लड़कियां अपना अधिकतर समय अपने घर पर और उसके उपरांत स्कूल में व्यतीत करती हैं। स्कूल उनके लिए घर से बाहर निकलने का एकमात्र मुख्य कारण है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि ग्रामीण लड़कियों को अपनी मां से सर्वाधिक स्नेह एवं अपनापन मिलता है और इसीलिए वे अपनी मम्मी को अपना आदर्श व्यक्तित्व मानती हैं। जहां–जहां लड़कियों को अपने परिवारजनों से यह स्नेह एवं आत्मीयता मिलती है वहीं पर वे उसके आदर्श व्यक्तित्व बन जाते हैं। अधिकांश लड़कियां अपनी मम्मी व अन्य परिजनों में यह सब गुण नहीं पाती। जहां पर उनको अपना आदर्श व्यक्तित्व बताती हैं। आंकड़ों से स्पष्ट

होता है कि 80 प्रतिशत लड़कियां संयुक्त परिवारों में रहती हैं जहां उनके साथ दादा–दादी, चाचा–चाची, ताऊ–ताई एवं उनके बच्चे भी साथ में रहते हैं। ऐसी पारिवारिक पृष्ठभूमि में मम्मी के अतिरिक्त जिस भी सदस्य से उसे अधिक आत्मीयता, स्नेह एवं अपनापन मिलता है उसे ही वह अपना आदर्श मानती हैं।

मम्मी एवं परिवार के अन्य सदस्यों के उपरांत शिक्षिका को लड़कियों द्वारा अपना आदर्श व्यक्तित्व बताना एक और जहां वर्तमान समाज के निर्माण में शिक्षक की भूमिका और दूसरी ओर स्वयं शिक्षिकाओं में आदर्श शिक्षकों के गुणों का विद्यमान होना भी दर्षाता है। शिक्षिकाओं द्वारा लड़कियों को दोस्त समझने, पढ़ने का बेहतर तरीका, लड़कियों के लिए उनके भविष्य के लिए अच्छा सोचना, उन्हें भविष्य के लिए अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करना, लड़कियों पर विश्वास करना इत्यादि गुण लड़कियों ने शोध के दौरान अपनी शिक्षिकाओं में बताएं जिससे उन्हें अपनी शिक्षिकाएं अच्छी लगती हैं और लड़कियां भविष्य में उनके जैसा ही बनना चाहती हैं इन्हें अपने आदर्श मानती हैं।

एक अच्छे शिक्षक से बच्चे प्रभावित होते हैं और ग्रामीण पृष्ठभूमि में तो बाहरी दुनिया जो उनके घर, परिवार एवं गांव से आगे है, स्कूल है, जहां से उन्हें अपने आप को सशक्त बनाने हेतु मार्गदर्शन मिलता है।

8 प्रतिशत ग्रामीण लड़कियां अंतरराष्ट्रीय कुश्ती खिलाड़ी गीता फोगाट को भी अपना आदर्श व्यक्तित्व मानती हैं। इसके पीछे लड़कियों ने उसे अपने जैसी ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली साधारण परिवार की लड़की का अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचना और देश का नाम रोशन करना पाया है। लड़कियां उससे प्रेरणा लेती हैं और उस जैसा बनना चाहती हैं। यह नाम ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियों को खेलों में आगे बढ़ाने की प्रेरणा देने एवं अपने आप को किसी भी तरह से लड़कों से कम ना समझने की ताकत एवं प्रेरणा देता है। अतः स्पष्ट है कि लड़कियां गीता फोगाट से अपने आप को जोड़कर देखती हैं और उसे अपना आदर्श व्यक्तित्व मानती हैं।

3 प्रतिशत लड़कियां डॉ. अब्दुल कलाम, खिलाड़ी सानिया मिर्जा एवं शहीद भगत सिंह को भी अपना आदर्श व्यक्तित्व मानती हैं। इनमें शहीद भगत सिंह की देशभक्ति से लड़कियां प्रभावित हैं। डॉ. कलाम की तरह विज्ञान के क्षेत्र में अपना नाम करना चाहती हैं तो 1 प्रतिशत सानिया मिर्जा के खेल के कारण उसे अपना आदर्श व्यक्तित्व बताती है।

ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षिकाओं की भूमिका

शोध से स्पष्ट हुआ है कि 100 प्रतिशत ग्रामीण लड़कियां स्कूल जाना बहुत पसंद करती हैं और उनका स्कूल जाने का मन करता है। इससे यह तो पता लगता है कि स्कूल में कुछ अच्छा है जो लड़कियों का स्कूल जाने का मन करता है। शोध के दौरान पाया गया की लड़कियों को अपनी सहेलियों से बात करना अच्छा लगता है और शिक्षिकाओं से पढ़ना भी अच्छा लगता है। कुछ शिक्षिकाओं के पढ़ने के तरीके एवं अन्य व्यवहार, उनकी बातचीत, अपनेपन और उनके प्रति भविष्य को लेकर मार्गदर्शन करने से भी लड़कियां प्रभावित हैं। इससे स्पष्ट है की शिक्षिकाओं की भूमिका ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण है। घर से बाहर वे प्रमुख व्यक्ति हैं जिनसे लड़कियों का निरंतर संपर्क होता है और ग्रामीण लड़कियां अपना अधिकतर समय घर पर एवं स्कूल में बिताती हैं। अतः शिक्षिकाओं का उत्तरदायित्व एवं भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है जो इस शोध के सामने आई है।

ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के सशक्तीकरण में विद्यालयों की बेहतर भूमिका हेतु सुझाव

विद्यालय की भूमिका के अंतर्गत इसका ढांचा, शिक्षकगण इत्यादि सभी को इस शोध में स्थान दिया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में जहां लड़कियों का बाहरी दुनिया से संपर्क शोध में कम पाया गया और साथ ही उनके अभिभावकों की शिक्षा का स्तर कम पाया गया। मात्र 12 प्रतिशत अभिभावक ही कक्षा 12 से आगे शिक्षित थे। 12 प्रतिशत अभिभावक अशिक्षित थे। अभिभावकों की शिक्षा संबंधी आंकड़े आगे प्रस्तुत किए गए हैं–

लड़कियों के अभिभावकों का शैक्षिक स्तर

अभिभावकों की संख्या प्रतिशत में	अभिभावकों का शैक्षिक स्तर
12 प्रतिशत	अनपढ़
8 प्रतिशत	5वीं कक्षा पास
28 प्रतिशत	6वीं से 9वीं कक्षा पास
28 प्रतिशत	10वीं कक्षा पास
12 प्रतिशत	12वीं पास
12 प्रतिशत	12वीं से अधिक

स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के अभिभावक कम पढ़े लिखे हैं। ऐसी स्थिति में गांव में स्थापित विद्यालय की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण बन जाती है। लड़कियों को जागरूक करने, भविष्य हेतु मार्गदर्शन एवं परामर्श में भी विद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी भूमिका अदा कर सकते हैं। शिक्षिकाएं अपने प्रभावी एवं सकारात्मक शिक्षण के साथ–साथ लड़कियों के साथ आत्मीयता, विश्वास और जुड़ाव का संबंध भी बनाएंगी तो लड़कियों की सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाने की संभावनाएं भी बढ़ेगी और उनके सशक्तीकरण में भी सहायक होंगे। अतः शिक्षकों की भूमिका मात्र पढ़ाने तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए अपितु लड़कियों के सर्वांगीण विकास में भी प्रभावी भूमिका उन्हें अदा करनी चाहिए।

स्कूली ढांचा भी ग्रामीण लड़कियों के विकास, उनके सशक्तीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। गांव में, स्कूलों में खेलों की सुविधा, प्रभावी प्रशिक्षण एवं लड़कियों की रुचि उनका भविष्य उज्जवल कर सकती हैं। गांव में खेलों की सुविधाओं, खेल उपकरणों के प्रबंध तथा प्रभावी प्रशिक्षण की अपेक्षा है।

ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के स्कूलों में स्वच्छता एवं शौचालय की समुचित व्यवस्था होना भी लड़कियों की उपस्थिति को स्कूलों में बढ़ावा देता है। अतः इसकी उचित व्यवस्था ग्रामीण स्कूलों में होनी चाहिए। पेयजल की भी समुचित व्यवस्था ग्रामीण स्कूलों में होनी चाहिए।

अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के सशक्तीकरण में स्कूलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। स्कूलों को अपनी चार दिवारी से बाहर निकलकर ग्रामीण एवं स्कूल के मध्य एक संबंध सूत्र के रूप में कार्य करना होगा। स्कूल को, ग्रामीणों को, लड़कियों को शिक्षित करने के लिए लड़कों के समान उन्हें सुविधाएं देने के लिए, पूर्वाग्रह मुक्त सोच रखने के लिए लड़के एवं लड़की के साथ समानता का व्यवहार करने के लिए न केवल जागरूक करना होगा अपितु प्रेरित करना होगा।

स्कूलों के ऐसा करने से लड़कियों की समाज में भागीदारी बढ़ेगी जो उनके सशक्तीकरण को दिशा देगी। स्पष्ट है कि स्कूलों की भूमिका लड़कियों के सशक्तीकरण में बहुत ही अहम है और स्कूलों को अपनी इस भूमिका का निर्वहन करना चाहिए।

निष्कर्ष

ग्रामीण लड़कियों के आदर्श व्यक्तित्व को जानना उनके पीछे के कारणों, इनकी पृष्ठभूमि को समझना, इनके आदर्श व्यक्तित्वों के निर्माण में शिक्षिकाओं की भूमिका का विश्लेषण करना तथा विद्यालयों की भूमिका लड़कियों के सशक्तीकरण में क्या हो सकती है इस संबंध में इस शोध लेख से नई दृष्टि मिलती है। ग्रामीण लड़कियों के आदर्श उनके अभिभावक एवं परिवार से

सर्वाधिक थे परंतु साथ ही साथ इन लड़कियों की शिक्षिकाएं भी उनके आदर्श में थी। अपनी शिक्षिकाओं जैसे ये ग्रामीण लड़कियां उनका अनुसरण करके उनसे प्रेरणा लेकर उन जैसा बनना चाहती थी। शिक्षिकाओं का व्यवहार, पढ़ाई का ढंग, आत्मीयता इत्यादि गुणों से लड़कियां शिक्षिकाओं को अपने आदर्श रूप में देख रही थी। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय की भूमिका ग्रामीण समाज एवं स्कूली शिक्षा व्यवस्था के बीच एक मध्यस्थ कड़ी की भी होनी चाहिए। समाज को लड़कियों के प्रति सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने एवं उन्हें शिक्षित करने के लिए भी ग्रामीण विद्यालय, ग्रामीण अभिभावकों को जागरुक कर सकते हैं। अंत में कहा जा सकता है कि ग्रामीण लड़कियों के सशक्तीकरण में ग्रामीण विद्यालयों की अहम भूमिका हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Census 2011. India https://www.census2011.co.in
2. Cohen Louis & Manion, Lawrence and Morrison, Keith (2000). Research Methods in Education, Routledge Falmer, London and New York.
3. District Jhajjar, Government of Haryana. https://jhajjar.nic.in and Census of India 2011. (2011).
4. Dutta, Swarup; Sinha Ishita; Parashar, Adya. (2018). Dalit Women and Water: Availability, Access and Discrimination in Rural India. Journal of Social Inclusion Studies, (1) 62-79, Sage Publication. https://journal.sagepub.com>doi.
5. Profile-Literacy-Know India. https://knowindia.india.gov.in.?lite...